समाज का बोध Notes Chapter 1 Class 11 Samaj Ka Bodh समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ UP Board

पुस्तक - 2 समाज का बोध

अध्याय-1

समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

स्मीणीय बिन्दु :

- 'सामाजिक संरचना' शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि समाज संरचनात्मक है।
- 'सामाजिक संरचना' शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक घटनाओं के निशिचित क्रम के लिए किया जाता है।
- मानव द्वारा समाज उस इमारत की तरह होता है जिसका प्रत्येक क्षण उन्हीं ईटों से पुनर्रचना होती है जिनसे उसे बनाया गया है।
- इमिल दुर्खाइम के अनुसार अपने सदस्यों की क्रियाओं पर सामाजिक प्रतिबंध लगाते हैं और व्यक्ति पर समाज का प्रभुत्व होता है।
- कार्ल मार्क्स ने भी संरचना की बाध्यता पर बल दिया हे लेकिन वह मनुष्य की सृजनात्मकता को भी महत्वपूर्ण मानते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय समाज में समूहों के बीच संरचनात्मक असमानताओं के अस्तित्व से है , भौतिक अथवा प्रतीकात्मक पुरस्कारों की पहुँच से है।
- आधुनिक समाज धन तथा शक्ति की असमानताओं के कारण पहचाने जाते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज उच्चता तथा निम्नता के आधार पर अनेक समूहों में बंट जाता है।
- स्तरीकरण की संकल्पना उस विचार को संदर्भित करती है जहाँ समाज का विभाजन एक निश्चित प्रतिमान के रूप में होता है, तथा यह संरचना पीढ़ी–दर –पीढ़ी चलती रहती है। असमान रूप से बाँटे गये लाभ के बीच बुनियादी प्रकार है जिसका उपभोग विशेषाधिकार प्राप्त समूहों द्वारा किया जाता है–

1. **जीवन अवसर**– वह सभी भौतिक लाभ जो प्राप्तकर्ता के जीवन की गुणवत्ता को सुधारते हैं जैसे संपत्ति, आय, स्वास्थ्य, रोजगार, मनोरंजन आदि।
2. **सामाजिक प्रस्थिति**– मान–सम्मान तथा समाज के अन्य व्यक्तियों की नजरों में उच्च स्थान।
3. **राजनैतिक प्रभाव**– एक समूह द्वारा समूह अथवा समूहों पर प्रभुत्व जमाना।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाएँ

सामाजिक प्रक्रियाएँ
- सहयोगी – संतुलन व एकता में योगदान। उदाहरण प्रतिस्पर्धा
- असहयोगी – संतुलन व एकता में बाधा। उदाहरण संघर्ष

https://www.evidyarthi.in

कार्ल मार्क्स और एमिल दुर्खाइम के अनुसार मनुष्यों को अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहयोग होता है तथा अपने और अपनी दुनिया के लिए उत्वादन और पुनः उत्पादन करना पड़ता है।

प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य का सरोकार मुख्य रूप से समाज में 'व्यवसाय की आवश्यकता' से है।

1. नए सदस्यों का समाजीकरण
2. संचार की साझा प्रणाली
3. व्यक्ति की भूमिका निर्धारण के तरीके

- समाज के विभिन्न भागों का एक प्रकार्य अथवा भूमिका होती है जो संपूर्ण समाज की प्रकार्यत्मकता के लिए जरूरी होता है।
- प्रतियोगिता तथा संघर्ष को इस दृष्टि से भी समझा जाता है के अधिकतर स्थितियों में से बिना ज्यादा हानि तथा कष्ट के सुलझ जाते हैं तथा समाज की भी विभिन्न प्रकार से मदद करते हैं।
- सहयोग, प्रतियोगिता एंव संघर्ष के आपसी संबंध अधिकतर जटिल होते है तथा ये आसानी से अलग नहीं किये जा सकते।

सहयोग तथा श्रम विभाजन

4. **सहयोग** : सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर किया गया कार्य जैसे – पारिवारिक कार्यो में हाथ बँटाना, राष्ट्र विपत्ति में जनता का सरकार को साथ देना।

- सहयोग का विचार मानव व्यवहार की कुछ मान्यताओं पर आधारित है :
  – मनुष्य के सहयोग के बिना मानव जाति के लिए अस्तित्व कठिन हो जाएगा।
  – जानवरों की दुनिया में भी हम सहयोग के प्रमाण देख सकते हैं।
- दुर्खाइम के अनुसार, एकता समाज का नैतिक बल है, तथा यह सहयोग और इस तरह समाज कि प्रकार्यो को समझने के लिए बुनियादी अवयव है।
- श्रम विभाजन की भूमिका जिसमें सहयोग निहित है, यथार्थ रूप में समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।
- दुर्खाइम ने यान्त्रित तथा सावयवी एकता में अंतर स्पष्ट किया है–

  1. **यात्रिक एकता** – यह संहति का एक रूप है जो बुनियादी रूप से एकरूपता पर आधारित है। इस समाज के अधिकांश सदस्य एक जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, कम–से–कम विशिष्टता अथवा श्रम–विभाजन को हमेशा आयु तथा लिंग से जोड़ा जाता है।

  2. **सावयवी एकता** – यह सामाजिक संहति का वह रूप है जो श्रम विभाजन पर आधारित है तथा जिसके फलस्वरूप समाज के सदस्यों में सह निर्भरता है।

- मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य ही नहीं करते हैं बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं। जैसे– भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनुभव के कारण अंग्रेजी भाषा के साथ समायोजन, सामंजस्य तथा सहयोग करना पड़ा था।

evidyarthi
2/7
https://www.evidyarthi.in

- **अलगाव** – इस धारणा का प्रयोग मार्क्स द्वारा श्रमिकों का अपने श्रम तथा उत्पादों पर किसी प्रकार के अधिकार न होने के लिए किया जाता है। इससे श्रमिकों की अपने कार्य के प्रति रूचि समाप्त होने लगती है।
- **प्रतिस्पर्धा** – यह विश्वव्यापी और स्वभाविक क्रिया है जिसमें व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाए बिना आगे बढ़ना चाहता है। यह व्यक्तिगत प्रगति में सहायता करती है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

प्रतियोगिता – अवधारणा एवं व्यवहार के रूप में

- **प्रतियोगिता** – एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत दो या अधिक व्यक्तियों का एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयास है।
- हमारे समाज में वस्तुओं की संख्या कम होती है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण रखने में असमर्थ रहता है। अर्थात जब वस्तुओं की संख्या कम हो और उसको प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक हो तो प्रतियोगिता प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। आर्थिक, सामाजिक धार्मिक, राजनितिक अर्थात प्रत्येक क्षेत्र प्रतियोगिता के ऊपर ही आधारित है।
- फेयर चाइल्ड के अनुसार प्रतियोगिता सीमित वस्तुओं के उपभोग या अधिकार के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों को कहते हैं।
- **पूँजीवाद** – वह आर्थिक व्यवस्था, जहाँ पर उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होता है, जिसे बाजार व्यवस्था में लाभ कमानें के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ श्रमिकों द्वारा श्रम किया जाता है।
- आधुनिक पूँजीवाद समाज जिस प्रकार कार्य करते हैं वहाँ दोनों (व्यक्तिगत तथा प्रतियोगिता) का एक साथ विकास सहज है। पूँजीवाद की मौलिक मान्यताएँ है।
  1. व्यापार का विस्तार
  2. श्रम विभाजन – कार्य का विशिष्टीकरण, जिसकी सहायता से अलग – अलग रोजगार उत्पादन प्रणाली से जुड़े होते है।
  3. विशेषीकारण
  4. बढ़ती उत्पादकता
- प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा का तर्क है कि बाजार इस प्रकार से कार्य करता है कि अधितम कार्यकुशलता सुनिशिचित हो सकें
- प्रतियोगिता, पूँजीवाद के जन्म क साथ ही प्रयत्न इच्छा के रूप में फूली–फली।

संघर्ष तथा सहयोग

- संघर्ष – हितों में टकराहट को संघर्ष कहते हैं। संघर्ष किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सदैव रहा है
- संसाधनों की कमी समाज में संघर्ष उत्पन्न करती है क्योंकि संसाधनो को पाने तथा उस पर कब्जा करने के लिए प्रत्येक समूह संघर्ष करता है।

3/7
https://www.evidyarthi.in

- संघर्ष विभिन्न प्रकार के होते हैं
  1. नस्ली संघर्ष
  2. वर्ग संघर्ष
  3. जाति संघर्ष
  4. राजनितिक संघर्ष
  5. अन्तराष्ट्रीय संघर्ष
  6. निजी संघर्ष
- समाज संघर्ष एंव सहयोग दोनों तत्वों के मिश्रण के साथ ही विकसित होता है, जहाँ समाज में एक तरफ प्रेम और सहयोग की भावना होती है वहाँ दूसरी तरफ नफरत, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि की भावना उत्पन्न होती है।
  जैसे कि भारतीय नारी अपने माता पिता की जयदाद का हिस्सा नहीं लेती ताकि उसके भाई भाभी उससे नफरत न करे। वह स्वयं से संघर्ष करती रहती है।
- परहितवाद – बिना किसी लाभ के दूसरों के हित के लिए काम करना परहितवाद कहलाता है।
- मुक्त व्यापार/उदारवाद – वह राजनैतिक तथा आर्थिक नजरिया, जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप नीति अपनाई जाए तथा बाजार एंव संपत्ति मालिकों को पूरी छूट दे दी जाए।
- सामाजिक बाध्यता – हम जिस समूह अथवा समाज के भाग होते हैं वह हमारे व्यवहार पर प्रभाव छोड़ते हैं। दुर्खाइम के अनुसार सामाजिक बाध्यता सामाजिक तथ्य का एक विशिष्ट लक्षण है।

सहयोग	संघर्ष
1. सहयोग अर्थात साथ देना	1. संघर्ष शब्द का अर्थ है हितों में टकराव अर्थात सहयोग न करना।
2. अवैयक्तिक होता है।	2. व्यक्तिगत होता है।
3. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।	3. अनिरंतर प्रक्रिया है
4. अहिंसक रूप है।	4. हिंसक रूप है।
5. सामाजिक नियमों का पालन होता है।	5. सामाजिक नियमों का पालन नहीं होता।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

शब्दकोश

1. **परार्थवादः** किसी भी स्वार्थीता या आत्म–रूचि के बिना दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए अभिनय का सिद्धांत।
2. **अलगावः** मार्क्स ने कार्य श्रम की प्रकृति, और श्रम के उत्पादों पर श्रमिकों के हिस्से पर नियंत्रण के नुकसान को संदर्भित करने के लिए शब्द का उपयोग किया।
3. **मानकशुन्यताः** दुर्खाइम के लिए, एक सामाजिक स्थिति जहाँ मानदंडों के मार्गदर्शन के मानदंड तोड़ने सामाजिक संयम या मार्गदर्शन के बिना व्यक्तियों को छोड़कर।
4. **पूंजीवादः** एक आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादन के साधन निजी रूप में स्वामितव में हैं और बाजार ढांचे के भीतर मुनाफे को जमा करने के लिएव्यवस्थित हैं, जिसमें श्रमिक मजदूरों द्वारा श्रम प्रदान किया जाता है।
5. **श्रम का विभाजनः** कार्य कार्यों का विशेषश्रता, जिसके माध्यम से विभिन्न व्यवसायों को उत्पादन प्रणाली के भीतर जोड़ा जाता है। सभी समाजों में श्रम विभाजन का कम से कम कुछ प्राथमिक रूप है, विशेष रूप से पुरूषों और महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों के बीच। औद्योगिकीकरण के विकास के साथ, श्रम का विभाजन किसी भी प्रकार के उत्पादन प्रणाली की तुलना में अधिक जटिल हो गया। आधुनिक दुनिया में, श्रम का विभाजन किसी भी प्रकार के उत्पादन प्रणाली की तुलना में अधिक जटिल हो गया। आधुनिक दुनिया में, श्रम का विभाजन श्रेत्र में अंतरराष्ट्रीय है।
6. **प्रमुख विचारधाराः** साझा विचार या विश्वास जो प्रमुख समूहों के हितों को न्यासंगत बनाने के लिए काम करते हैं। ऐसी विचारधारा उन सभी समाजों में पाई जाती है। जिनमें वे व्यवस्थित और समूह के बीच असमानताओं की असमानता रखते हैं। विचारधारा की अवधारण शक्ति के साथ निकटता से जुडती है, क्योंकि वैचारिक प्रणाली समूह की भिन्न शक्ति को वैध बनाने के लिए काम करती है। व्यक्तिगतताः सिद्धांत या सोचने के तरीके जो समूह के बजाए स्वायत्त व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
7. **लाईसेज–फेयर उदारवादः** सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप निति के सामान्य सिद्धांत और बाजारों और संपत्ति मालिकों के लिए स्वतंत्रता के आधार पर एक राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण।

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक स्तरीकरण से आप क्या समझते है ?
2. 'अलगाव' से क्या तात्पर्य है ?
3. सामाजिक संरचना से क्या आशय है ?
4. परहितवाद क्या है ?
5. श्रम विभाजन से क्या तात्पर्य है ?

5/7
https://www.evidyarthi.in

6. मुक्त व्यापार क्या है ?
7. सामाजिक बाध्यता से क्या तात्पर्य है ?
8. संघर्ष से आप क्या समझते है ?
9. प्रतियोगिता से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. कार्ल मार्क्स के सहयोग संबंधी विचारों का उल्लेख कीजिए।
2. यांत्रिक और सावयवी एकता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. विशेषाधिकारी प्राप्त समूहों द्वारा उपभोग किये जाने वाले तीन प्रमुख लाभों का उल्लेख कीजिए।
4. संघर्ष के विभिन्न प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइये।

6 अंक वाले प्रश्न

1. समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने के दो तरीके स्पष्ट कीजिए।
2. मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य हि नहीं करते बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं – समझाइये।
3. " प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा है " इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. प्रतियेागिता, सहयोग और संघर्ष के आपसी सम्बन्ध समझाइये।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in